आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2474 • उदयपुर, सोमवार 04 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चलने को आतुर लिंकन रानी

जब खुशियां द्वार पर दस्तक देती दिखाई दें और एकाएक वे काफूर होने लगे तो व्यक्ति अथवा परिवार पर क्या बीतेगी, उसकी कल्पना से ही मन सिहर उठता है। ओडिशा के ब्रह्मपुरगंजाम निवासी कानूस्वाय के परिवार के साथ ऐसा ही कुछ हुआ कि खुशियां आती दिखाई दी और जब वे आ गई तो गहरे तक पीड़ा दे गई। कानूस्वाय की पत्नी ने वर्ष 2018 में कस्बे के सरकारी अस्पताल में अपनी पहली संतान को जन्म दिया। माता–पिता और परिवार आने वाले बच्चे के लालन–पालन को लेकर छोटे–छोटे लेकिन रंगीन सपने सजा रहे थे। बच्ची के जन्म की खुशी तो मिली लेकिन अगले ही पल वह खुशी बिखर गई। जन्म लेने वाली बच्ची के दोनों पांव पेट से सटे थे। माता–पिता इस स्थिति में शोक और संशय में डूब गए। डॉक्टरों ने किसी तरह उन्हें दिलासा दिया कि बच्ची के पांव को वे सीधा करने की पूरी कोशिश करेंगे, हालांकि इसमें थोड़ा वक्त लगेगा। बच्ची को माता–पिता ने लिंकन रानी नाम दिया। इस तरह 8–9 महीने बीत गए। डॉक्टरों ने पांव तो लम्बे–सीधे कर दिए, लेकिन बच्ची अभी ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। इसका कारण दोनों पांव के पंजों का आमने–सामने मुड़ा हुआ होना था। कुछ अस्पतालों में दिखाया भी पर कहीं भी संतोषजनक जवाब नहीं मिला। किसी बड़े अस्पताल का रुख करना उनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था। वह दिन–रात मजदूरी कर जैसे–तैसे परिवार का पोषण कर रहा था। करीब 7–8 माह पूर्व उन्हीं के गांव का एक दिव्यांग नारायण सेवा संस्थान, उदयपूर में पांव का ऑपरेशन करवाकर आराम से चलता हुआ जब घर लौटा तो उसे देख कानू को भी अपनी बिटिया के लिए उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। अप्रेल 2021 में माता–पिता लिंकन को लेकर संस्थान में आए, जहां उसके दांए पंजे का सफल ऑपरेशन हुआ और इस वर्ष 10 अगस्त को वह दूसरे पंजे और घुटने के ऑपरेशन के लिए आए, यह ऑपरेशन सफल रहा। पहले वाले पंजे के ठीक होने से माता–पिता को बाएं पांव के भी पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है तो लिंकन अन्य बच्चों की तरह चलने–दौड़ने को मचल रही है।

दीपक के जीवन में उजाला

घर में पहली संतान हुई, हर्ष का वातावरण था। किन्तु वह स्थायी नहीं रह पाया। बच्चे ने जन्म तो लिया, लेकिन शारीरिक विकृति के साथ। बाएं पांव में घुटने के नीचे वाले हिस्से में हड्डी थी ही नहीं। पांव मात्र मांस का लोथड़ा था।

राजस्थान के राजसमंद जिले की खमनोर तहसील के मचींद गांव निवासी किशनलाल की पत्नी राधाबाई ने उदयपुर के बड़े सरकारी अस्पताल में 2014 में पुत्र को जन्म दिया। डॉक्टरों ने शिशु की उक्त स्थिति को देखते हुए घुटने तक बायां पांव काटना जरूरी समझा। उन्होंने माता–पिता को बताया कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो बच्चे के शरीर में संक्रमण फैल सकता है।

माता–पिता ने दुःखी मन से जन्म के तीसरे ही दिन बच्चे का पांव काटने की स्वीकृति दी। मजदूरी करके परिवार चलाने वाले किशनलाल ने बताया कि करीब 2 माह बाद पांव का घाव सूखा और वे बच्चे को घर ले आए।

पिछले सात साल बच्चे की दिव्यांगता को देखते हुए किस तरह काटे और कैसी पीड़ा झेली इसका वे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। ज्यों–ज्यों बच्चा बड़ा होता गया उसका दुःख भी बड़ा होता गया। सन् 2020 में उन्होंने नारायण सेवा संस्थान का निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने का टी.वी. पर कार्यक्रम देखा था। जो उन्हें उम्मीद की एक किरण जैसा लगा।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि दीपक को लेकर उसके परिजन संस्थान में आए थे। तब कृत्रिम पैर लगाया गया। उम्र के साथ लम्बाई बढ़ने पर कृत्रिम पांव थोड़ा छोटा पड़ गया। जिसे बदलवाने हेतु शुक्रवार को दीपक अपने मामा के साथ आया। उसे कृत्रिम अंग निर्माण शाखा प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू ने उसके नाप का कृत्रिम पांव बनाकर पहनाया। वह अब खड़ा होकर चल सकता है।

निशा को मिला नया सवेरा

बेतिया (बिहार) की रहने वाली निशा कुमारी (15) का बांया पैर जन्म से ही वि.त अर्थात् छोटा था। पैरो के इस असंतुलन को देख पिता चान्देश्वर शाह व माता चंदादेवी सहित पूरा परिवार चिंतित रहा। किसी ने बताया कि थोड़ी बड़ी होने पर बच्ची का पांव स्वतः ठीक हो जाएगा, लेकिन ऐसा न होने पर माता–पिता की चिंता और अधिक बढ़ गई। अस्पताल में दिखाने पर ऑपरेशन का काफी खर्च बताया। जो इनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था।

पिता बाजार में सब्जी का विक्रय करते हैं, एवं माता–पिता खेतीहर मजदूर है। निशा के दो भाई और और दो बहनें हैं। कुल मिलाकर परिवार में सात सदस्य हैं, जिनका पोषण माता–पिता की कमाई से बामुश्किल हो पाता है। कुछ ही समय पूर्व दिल्ली में रहने वाले इनके करीबी रिश्तेदार भूषण शाह ने टीवी पर नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क पोलियो सुधार ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग वितरण के बारे में कार्यक्रम देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तत्काल निशा के पिता को सूचित किया।

बिना समय गंवाए संस्थान चान्देश्वर और उनके साढ़ू वासुदेव शाह जुलाई के पहले सप्ताह में ही निशा को लेकर उदयपुर संस्थान मुख्यालय पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसकी जांच कर 'एक्सटेंशन प्रोस्थेटिक' (कृत्रिम अंग) लगाया।

इसके लगने से निशा के दोनों पांवों में संतुलन है और वह बिना सहारे चल सकती है। निशा के भविष्य के प्रति चिंतित पूरा परिवार अब प्रसन्न है।

वक्त फिर से मुसकराया

मेरा नाम धर्मेन्द्र है जिला धौलपुर, राजस्थान से हूँ। मैं छोटा था मेरा पैर टेढ़ा हो गया। मतलब मेरे को चलने में प्रॉब्लम होती थी। तो फिर मैं नारायण सेवा संस्थान गया। वहां पर मैंने ऑपरेशन करवाया, मेरा पैर सीधा हो गया। केलीपर लगा रखा ये। तो अब चलने में कोई दिक्कत नहीं है।

संस्थान में उसका निःशुल्क ऑपरेशन हुआ। अब धर्मेन्द्र आसानी से चलने लगा। वहां पे एक पैसा भी नहीं लगा। खाना– पीना– रहना नारायण सेवा संस्थान का था। यहीं पर उसने मोबाईल रिपेयरिंग का काम भी सीखा। और अपने लिये दो वक्त की रोटी का हुनर हमेशा के लिये पा लिया।

अब मैं जॉब कर रहा हूँ। आज में अच्छे से कमा सकता हूँ। मेरे को कोई दिक्कत नहीं हैं। एन्ड्रोयड वगैराह सेट है, सब टीवी और हार्डवेयर दोनो काम जानता है वो इसकी वजह से ग्राहक भी बहुत अच्छे आ रहे हैं। और दस हजार रुपये महीने के समथिंग दे देते है। सब लोग कमाते थे, मेरे पास कुछ भी मतलब काम करने के लिये ना तो कोई मुझे जॉब देता था। कुछ भी नहीं था, ऐसे कुछ नहीं विकलांग है। धर्मेन्द्र करता भी क्या? बचपन में टेढ़े हुए पैरों ने सिर्फ खिसकना सिखाया था। पर नारायण सेवा संस्थान ने उसे जिन्दगी जीना सिखाया। मैं नारायण सेवा संस्थान को धन्यवाद करता हूँ वहां पे मेरे छोटे भाई का पैर सही हुआ। सभी दानदाताओं को अनुरोध करता हू कि ऐसे और भाइयों को और अपने पेरो पे खड़ा करे।

परिवार की खुशियां लौट आई– घर वाले भी मेरे से खुश हैं, धन्यवाद देता हूँ अपनी ओर से। वक्त फिर से मुसकराया कि सपने होंगे साकार। हर दिल बोला नारायण सेवा संस्थान का आभार।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

माताओं और बहनों से प्रार्थना से है आज जो मेरी वाणी सुनने की .पा कर रहे है, उनसे प्रार्थना है कि आज से अपना मनमुटाव बंद कीजिए। और ऐसे कर्म मत कीजिए जिससे मन–मुटाव पैदा हो जाये। और ऐसी आदत भी मत डालिये। पिताजी ने कहा था– एक बार एक गाँव में एक आदमी इतना कंजूस, इतना लोभी इतना लालची। हाँ, वो कहते है ना– चमड़ी जाये पर दमड़ी ना जाये। हाँ, डाकू ने पकड़ लिया बोल– बोल या तो तेरे पाँच हजार रुपये दे दे, नहीं तो तेरे प्राण ले लूंगा। भैया प्राण ही ले लो, पाँच हजार रूपये रहेंगे तो काम आऐंगे। लो सा. जब आपके प्राण ही चले जाऐंगे तो आपके पाँच हजार रुपये रहेंगे कहाँ से ?

एक आदमी कहता है – मरियाई में गंगाजी नी जाऊ और गंगाजी रो नाम भी नी लेतो। मरियाई में नी जाऊ। मन में बोलतो गंगाजी, ऊपर बोल तो मरियाई में फिर राम रो नाम अन्दर लेता, ऊपर से लेता मरियाई में नी बोलू। मतलब राम रो नाम में नी बोलू। और वो मरी ग्यो। वीका फूल भेजीया, जणीने हरिद्वार भेजीयों वीने क्यों, पाँच हजार मारउ ले ले। पाँच हजार आया बाद लेई लीजे। एक दुशाला में बांधीया, दुशाला चील ले गई। दुशाला में लाडू– बाटी भी था थोड़ा। कहानी चील ले गई और चील ने वो लाडू तो जीम लिया और दुशाला फड़ाक से फेका। तो एक टोकरा पड़ा था मलमूत्र का उसमे जा के गिरा। वो सारे फूल अर्थात् हड्डियाँ मल–मूत्र मे सन गई। और वो महिला उस दुशाले को धोके पहन के आई तो बहूं ने पहँचान लिया। बोली– मेरे ससुर जी कहते थे, मरियाई ना जाउ तो मरियाई नी ग्या।

ये कहानी है, हमे सावचेत करने की कहानी है कितना भूतकाल में भटक लिये। मालूम ही नहीं व्याकुल कितना किया ? और उस व्याकुलता से नुकसान बहुत हो गया लाला। हाई ब्लड प्रेशर रहने लग गया, डॉयबिटिज रहने लग गई।

सम्पादकीय

जीवन की सार्थकता के लिये पहले आवश्यकता है कि इसका अर्थ भी हो। हमने सार्थक जीवन का अर्थ केवल सफलता के सोपानों पर चढ़कर विजय पताका फहराने को ही मान लिया है। सफलता और सार्थकता दो अलग – अलग सूलभ आयाम हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जबकि कोई सफल तो नहीं हो पाया पर सार्थक जीवन जी गया। ऐसा दृष्टांत रामायण काल में गिद्धराज जटायु का आता है। वह सीताहरण करते हुए रावण को चुनौती देता है। रावण के साथ युद्ध भी करता है पर वह सफल नहीं हो पाता। असफलता व आघात ही उसको प्राप्त होते हैं। पर क्या उसका जीवन सार्थक नहीं हुआ ? महासार्थक हुआ। स्वयं भगवान राम उसे गोद में उठाकर अश्रुजल से नहलाते हैं। स्वयं उसका अंतिम संस्कार करते हैं। जिनके दर्शन के लिए ऋषिगण वर्षो तक तप करते है वे उसका अंतिम संस्कार करते हैं। इससे सार्थकता और क्या अधिक होगी ? अतः जीवन को अर्थमय बनायेंगे तभी वह सार्थक भी होगा।

कुछ काव्यमय

जीवन तभी अर्थपूर्ण है
जब उसका कोई उद्देश्य
कोई संकल्प हो।
सफलता की पताका का
कोई छोर फहरा न सकें
पर संतोष हो, चाहे अल्प हो।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

जहाँ प्रेम वहीं प्रसन्नता

एक परिवार का मुखिया, पत्नी और उसकी पुत्री एक माह की तीर्थ यात्रा कर पुनः घर लौटे और दरवाजे का ताला खोलने को ज्योहीं आगे बढ़े उन्हें दरवाजे पर तीन मूर्तियां खड़ी दिखाई दी।

वे चकित हुए कि ये मूर्तियां कहां से आ गयी। उनके सामने उलझन उस समय और बढ़ गयी, जब ताले में चाबी लगाने के बाद भी वह नहीं खुला।

तीनों परेशान थे और चर्चा करने लगे कि यात्रा पर प्रस्थान करते समय तो यह मूर्तियां दरवाजे या आस–पास कहीं भी नहीं थी, अब कहां से आ गयी।

तभी तीनों मूर्तियां एक साथ बोल पड़ी–देखो, दरवाजा तो तभी खुलेगा जब तुम अपने साथ हम में से किसी एक को घर में प्रवेश दोगे। मुखिया ने उन तीनों से परिचय पूछा, तब पहली मूर्ति ने कहा –मैं सफलता हूं। दूसरी बोली –मैं प्रसन्नता हूं और तीसरी मूर्ति ने कहा कि मैं प्रेम हूं।

अब परिवार के तीनों ही जन विचार– विमर्श करने लगे कि मूर्तियों में से गृह प्रवेश के लिए किसे चूना जाए? मुखिया बोला– मैं तो सफलता के साथ प्रवेश करना चाहूंगा। क्योंकि जीवन में सफलता के साथ प्रसन्नता स्वतः आ जाती है। पत्नी इससे असहमत थी। उसने कहा– यह जरूरी नहीं कि सफलता के साथ प्रसन्नता स्वतः आ जाती है। कई बार सफलता परेशानियों का कारण भी बन जाती है।

इसलिए मैं तो प्रसन्नता के साथ भीतर जाने की इच्छा रखती हूं। क्योंकि प्रसन्नता से वातावरण सकारात्मक बना रहता है। फिर, दोनों

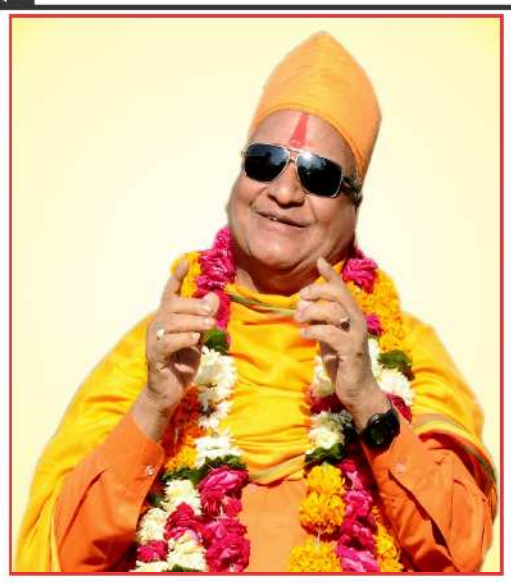

ने अपनी पुत्री से उसकी पसन्द पूछी तो वहां बोली–मैं तो घर में प्रेम की मूर्ति ले जाना चाहूंगी। क्योंकि जहां प्रेम होगा, वह प्रसन्नता और सफलता स्वयमेव आ जाएगी।

तीनों मूर्तियों ने भी सिर हिलाकर उसकी बात का समर्थन किया। मित्रों ! प्रेम के पंथ में यह गुंजाइश नहीं है कि प्रभु की कोई भी रचना प्यारी न लगे। जो सब प्रकार के भेद–भाव मिटा कर सभी प्राणियों में एकत्व भाव स्थापित कर प्रेम का प्रसार करते हैं, उन्हें पग–पग पर परमात्मा का बल प्राप्त होता है और वे सफलता व प्रसन्नता के सोपान चढ़ते जाते हैं। परिवार में सुख–शान्ति के लिए जरूरी है कि प्रत्येक सदस्य में परस्पर प्रेम बना रहे।

–कैलाश 'मानव'

सेठजी की घड़ी

किसी भी वस्तु या प्राणी के प्रति राग, दुःखों का कारण होता है। राग जोड़ना है और जब यह जुड़ाव टूटता है, तब अलगाव का असहनीय दर्द होता है। राग किसी भी रूप में किसी के भी साथ हो सकता है; प्राणी का प्राणी के साथ या प्राणी का वस्तु के साथ।

एक बार एक सेठ की दुकान पर वर्षों पुरानी घड़ी लगी हुई थी। वह घड़ी उनको पूर्वजों से प्राप्त थी। सेठ जी घड़ी से अत्यन्त स्नेह रखते थे। एक दिन सेठ जी जब दुकान पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वह घड़ी दीवार से नीचे गिरकर जमीन पर टूटी हुई पड़ी थी। यह देखकर सेठ जी बहुत दुःखी और क्रोधित हो गए। उन्होंने अपने नौकर को बुलाकर कहा– यह क्या किया? मेरी प्रिय घड़ी तोड़ दी। नौकर ने उत्तर दिया –सेठ जी, साफ करते समय गलती से यह घड़ी दीवार से गिर गई और टूट कर बिखर गई। मैंने इसे जानबूझ कर नहीं तोड़ा। मैं तो इसे सिर्फ साफ कर रहा था।

सेठजी ने नौकर को क्रोधपूर्वक बहुत डाँटा कि यह मेरी सबसे प्रिय घड़ी थी। यह मेरे पूर्वजों की निशानी थी। यह मेरे घर की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु थी। सेठ जी मन ही मन बहुत दुःखी हुए। उन्हें रातभर घड़ी की चिंता में नींद नहीं आई। उन्होंने करवट बदलकर देखा कि नौकर मस्ती से सो रहा था। उसे घड़ी टूटने की कोई चिंता ही नहीं थी।

सेठ जी ने मन ही मन स्वयं से कहा–बड़ी अजीब बात है, इसने इतना बड़ा नुकसान कर दिया और मस्ती से खर्राटे ले रहा है। इसे किसी बात की कोई चिंता ही नहीं है और एक मैं हूँ जिसे नींद ही नहीं आ रही है। दूसरे दिन सेठ जी ने नौकर को बुलाकर कहा–माफ करना भाई, तुमने मेरी बरसों सेवा की है और एक घड़ी के टूटने पर मैंने तुम्हें बेवजह बहुत डाँट दिया। लेकिन मेरे मन में यही विचार था कि तुमने मेरी इतने वर्षों तक सेवा की है, इसके बदले में मैं कल वह घड़ी तुम्हें भेंट करना चाहता था। खैर, अब घड़ी टूट गई है तो कुछ भी नहीं किया जा सकता। रात्रि को जब दोनों सोए तो सेठ जी तो आराम से नींद लेते रहे, लेकिन नौकर को रातभर नींद नहीं आई। वह तो सारी रात यही सोचता रहा और चिंतित होता रहा कि काश ! वह सुंदर घड़ी टूटी नहीं होती तो आज मुझे मिल गई होती।

व्यक्ति का जब किसी वस्तु से राग नहीं होगा तो उसे किसी चीज के टूटने या खोने का दुःख ही नहीं होगा। राग को आचरण से सदैव दूर रखना व्यक्ति का हर सम्भव प्रयास होना चाहिए। राग, मोह और आसक्ति दुःखों का मूल है।

– सेवक प्रशान्त भैया

आपश्री की अपनी नारायण सेवा संस्थान ने इलाज ही नहीं .... रोजगार के काबिल बनाया।

सहेंगे तो आगे बढ़ेंगे। ऐसा ही जज्बा लिये गोरखपुर की सरिता कुमारी को नई जिन्दगी को जीने का हौसला मिला, नारायण सेवा से ।

वे कहती हैं मैं जब चार साल की थी तब मेरे पांव में पोलियो हो गया। मेरे माता – पिता ने काफी इलाज कराया लेकिन ठीक नहीं हुआ है।

पहले मैंने कभी सोचा भी नहीं थी कि, मैं अपने पाँव पे खड़ा होकर चल पाऊंगी। लेकिन यहाँ आकर मेरे मन में उम्मीद जगी कि मैं भी अपने पांव पे खड़ी हो के चल सकूंगी।

अपने पांव का निःशुल्क ऑपरेशन करवाकर। अब सरिता कुमारी अपनी जिन्दगी का सफर आसानी से तय कर लेती है।

संस्थान ने जहां सरिता कुमारी को पैरों पे खड़ा किया। वहीं पे उसे निःशुल्क कम्प्युटर कोर्स की ट्रेंनिग देकर उसकी जिन्दगी को जोड़ा रोजगार के सुअवसर से। वो संस्थान के प्रति अपना आभार प्रकट करती हैं। वे कहती रहती है कि नारायण सेवा संस्थान ने मेरा इलाज भी करवाया साथ भी कम्प्युटर कोर्स कराया। मैं आज बहुत खुश हूँ।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सत्तू बनाने के लिये रविवार का दिन नियत किया। इसके पूर्व गेहूँ पिसवाना जरूरी था। उसे 300 से ज्यादा गेहूँ की बोरियों के आश्वासन या पैसे मिल गये थे मगर उसने गेहूँ अब तक खरीदा नहीं था क्यूंकि रखने की समस्या थी। सत्तू बनाना तय हो गया तो 16 बोरी गेहूँ खरीदकर सीधे चक्की में भिजवा दिया गया।

सत्तू बनाने के लिये कुछ लोगों ने हलवाई और मजदूर रखने की बात की तो कई उत्साही लोगों ने आगे आकर मना कर दिया कि मजदूरों पर पैसा व्यर्थ क्यूं किया जाय, बड़ी मुश्किल से लोगों से चन्दा मांग मांग कर यह पैसा इकट्ठा किया है, सत्तू तो हम अपने हाथों से बनाएंगे। उनकी इस बात का सभी लोगों ने तालियां बजाकर स्वागत किया।

इससे सेवाभावियों का जोश और बढ़ गया।

शनिवार की रात को ही सारा सामान गोदाम के बाहर रखवा दिया। रविवार को सुबह 4 बजे भट्टी पूजन कर कार्य शुरू किया गया। भट्टी पर कढाह रख अन्दर बड़ी बड़ी लकड़ियां दे अग्नि प्रज्जवलित की गई। सारा कार्य बीसलपुर में किया उसी आधार पर हो रहा था।

सुबह के छोटे प्रहर थे फिर भी कॉलोनी भर के बच्चे एकत्र हो गये थे। सहयोग सभी तरफ से मिल रहा था, किसी ने सत्तू फैलाने के लिये पतरे भी दे दिये थे। भट्टी स्थल पर सुबह का झुटपुटा होते होते मेले सा वातावरण बन गया। हर कोई किसी न किसी रूप में अपना योगदान दे ही रहा था।

अंश - 126

सकारात्मक ऊर्जा देने के साथ मच्छरों को भी दूर भगाते ये पौधे

मानसून में मच्छरजनित बीमारियों की आशंका बढ़ जाती है। मच्छरों से बचने के लिए आप चाहें तो घर में कुछ ऐसे इंडोर पौधों को रख सकते हैं, जिनकी गंध मच्छरों को दूर भगाती है। जाने इनके बारे में –

लेमन ग्रास

आयुर्वेद में इसे 'भूतृण' कहा जाता है। इसमें मौजूद गुणों को .मिनाशक माना गया है। इसमें पाए जाने वाले सिट्रोनिला ऑयल की गंध से मच्छर, मक्खी और कई प्रकार के कीट–पतंगे नष्ट हो जाते हैं या भाग जाते हैं। इसके गुणों को देखते हुए इसे विशेषकर घर के प्रवेश द्वार या बालकानी आदि में रखना ठीक रहता है। इस पौधे से घर में सकारात्मक ऊर्जा भी आती है।

लहसुन

आयुर्वेद में लहसुन को रसोन भी कहा गया है, क्योंकि इसमें अम्ल रस के अलावा सभी जरूरी रस मौजूद होते हैं। आयुर्वेदाचार्य भावप्रकाश ने इसे श्रेष्ठ . मिनाशक बताया है।

इसमें पाए जाने वाले एलिसीन और सल्फर तत्व के प्रभाव से कीट पतंगे और मच्छर दूर भागते हैं। इन्फेक्शन होने पर लहसुन को पीसकर उसकी लुग्दी बनाकर घाव पर लगाते हैं।

पुदीना – संस्कृत में इसे 'पूतीहा' कहते हैं। पूती शब्द का अर्थ 'दुर्गन्ध' है। ऐसे में पूतीहा का मतलब दुर्गन्धनाशक होता है। आयुर्वेद में इसे कृमिनाशक भी कहा गया है। आमतौर पर यह मुंह व दांतों में पैदा होने वाले कीटाणुओं का नाश करता है। इसमें मौजूद मेन्थाल की गंध से कीट, मच्छर घर में नहीं आते। इसके पौधे को भी घर में रखा जा सकता है।

ध्यान रखें : इनके अलावा तुलसी, मरूबक, गेंदा, लेवेंडर, मीठा नीम, तेजपत्र से भी मक्खी और मच्छर दूर भागते हैं। ये एक तरह से घर का शुद्धिकरण करते हैं। ध्यान रखें कि इन पौधों में पानी सीमित मात्रा में ही डालें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्साक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

अरे! भई यहाँ का स्टाफ कहाँ है ? क्लर्क कहाँ है ? साहब वो डरते हैं। आपने ताला खुलवा दिया, क्रोध में आ जाएंगे। उनके पास बहुत बाहुबल है, बहुत साथी हैं, जमादार ने कहा–मैंने कहा–चलो मैं सफाई करता हूँ, आप भी सफाई कीजिये। दो घण्टे में धूल साफ करी।

देखा मनीआर्डर बेतरतीब पड़े हैं, सेविंग रजिस्टर बड़ी मुश्किल से मिला। लोग आ गये, लोगों को कहा–एक घण्टा और वेट कीजियेगा, आपने इतने दिन वेट किया है। जरूर जरूर साहब। थोड़ी देर में पोस्टमास्टर साहब अपनी बन्दूक ले के आये।

बन्दूक का लाईसेन्स है–मेरे पास। बड़ी–बड़ी मूछें। कहो इस्पेक्टर कैसे हो? आईये, पोस्टमास्टर साहब आइये आइये बिराजिये। अरे! भैया चाय लाईये, पोस्टमास्टर साहब के लिये पानी लाइये। ओ! मेरे लिये चाय मंगा रहे हो? आप भी पीजिये इस्पेक्टर, ओ अर्द्धली, ओ जमादार इधर आ, तूं भी चाय पी, जी जी, मैंने कहा– पोस्टमास्टर साहब काम तो ज्यादा है।

मैंने देखा वर्कलोड ज्यादा है। सेविंग अकाउन्ट भी कई हैं, मनीआर्डर भी कई हैं, पार्सल पड़े हैं अठारह पार्सल पड़े हैं। आपके पास लोड ज्यादा है वर्क–का। एक ही क्लर्क है– आपके पास। मैं एसीपी साहब को कहूंगा एक क्लर्क और लगावें। खड़ा हुए वो, इस्पेक्टर पहली बार कोई इंस्पेक्टर मिला जिसने मेरी तकलीफ देखी है। वो पहले वाले आते थे वो डांट–डपटते थे। वो मेरी गालियाँ सुनते थे, भाग जाते थे।

फिर आना ही बंद हो गये। पहली बार मेरी तकलीफ सुनी तूने। जय कालिका माता, जय कालिका माता। बोलो–सब जय कालिका माता, जय कालिका माता। बैठ गये, इस्पेक्टर कहाँ ठहरे हो ? डाकबंगले में भोजन का पेमेन्ट मैं करूंगा। आइये, होटल में चलते हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 253 (कैलाश 'मानव')

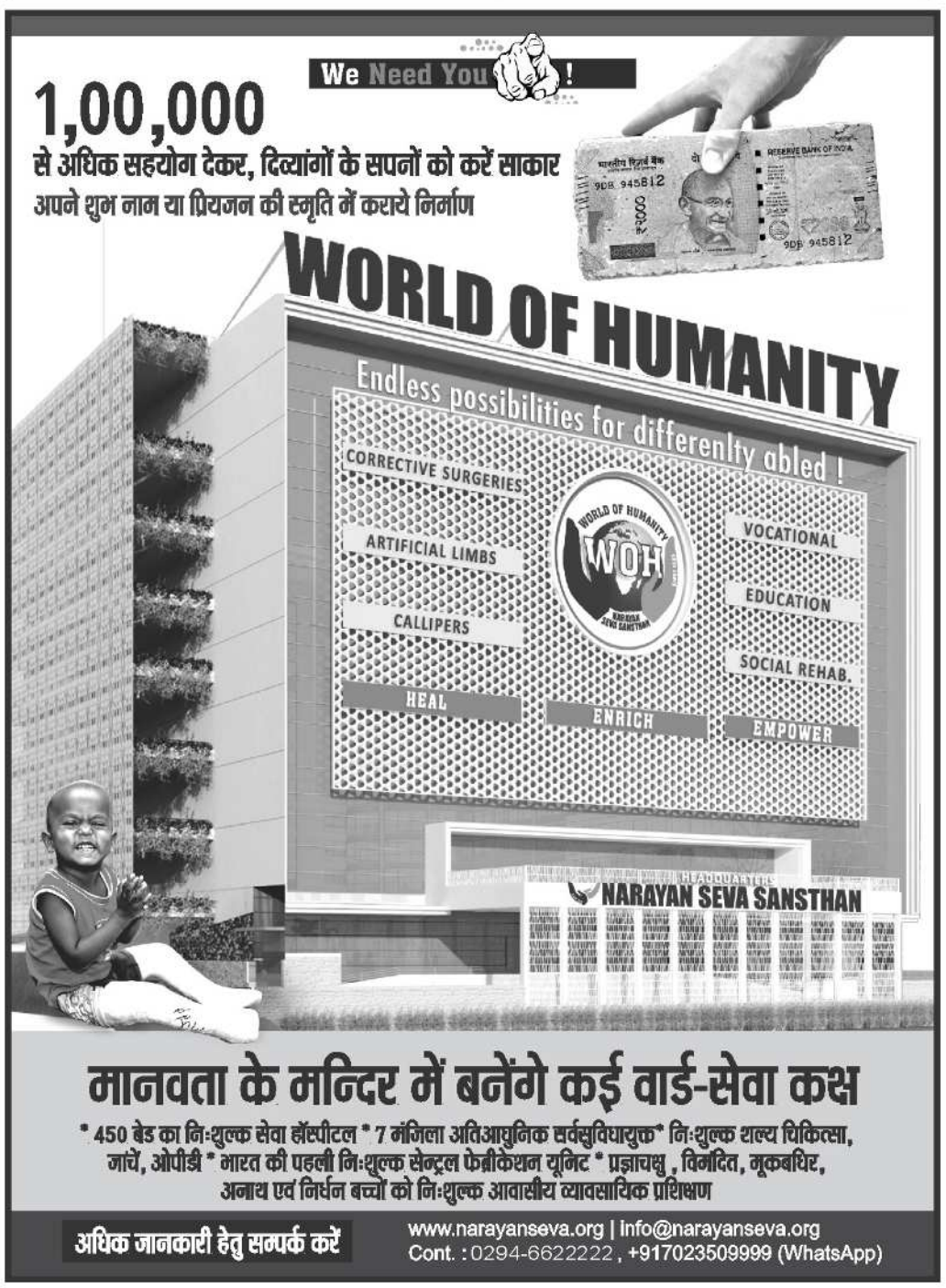

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023